شروط شهادة أن محمدا رسول الله ونواقضها

فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي / حفظه الله

باللغة الهندية

المترجم: عبد الكريم عبد السلام المدني

विषय

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की गवाही देने की शर्तें और उसे तोड़ने वाली चीज़ें।

पहला खुतबा :

إن الحمد لله نحمده ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له ومن يضلل فلا هادي له وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

अल्लाह की प्रशंसा और उस के नबी ﷺ पर दरूदो सलाम के बाद :

सब से उत्तम कलाम अल्लाह का कलाम है और सब से उत्तम मार्ग मुहम्मद ﷺ का मार्ग है,सब से बुरी चीज़ दीन में घड़ी गई बिदअतें हैं और (दीन में) हर घड़ी गई चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है।

ऐ मुसलमानो! अल्लाह ताला से डरो और उस से खौफ खाओ,उस की पैरवी करो और उस की नाफर्मानी से बचो और याद रखो कि

मुहम्मद ﷺ की रिसालत की गवाही देने वालों के लिये यह गवाही उस समय लाभदायक हो सकती है जब उस के साथ आठ शर्तें [1] पाई जायें :

1. उस का अर्थ जानना और समझना अर्थात इस बात पर ईमान रखा जाये कि वह अल्लाह की ओर से (भेजे हुये) सत्य संदेष्टा हैं।
2. दिल से उस पर विश्वास रखना,जिस के विपरीत शक करना है,इस का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है :

   (إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا)

   तर्जुमा : मोमिन तो वह हैं जो अल्लाह पर ईमान लायें फिर शको शुब्हा न करें।
3. ज़ाहिर और बातिन में उस की पैरवी करना,इस प्रकार कि पैग़म्बर की पैरवी की जाये,इस की दलील अल्लाह ताला का यह कथन है :

   (وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى)

   तर्जुमा : जो अपने आप को अल्लाह के ताबे करदे और हो भी नेक कार्य करने वाला तो निःसंदेह उस ने मज़बूत कड़ा थाम लिया।
4. उस के (अपेक्षाओं को) क़बूल करना, जिस ने मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही देने के लवाज़मात में से किसी भी भाग को अस्वीकारा उस ने (शहादत का) इन्कार किया।
5. इख्लास के साथ उस की गवाही देना,इस प्रकार कि उस का उद्देश्य केवल अल्लाह की निकटता प्राप्त करना हो जिस के विपरीत है शिर्क करना,इस प्रकार कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की

([1])देखें : "आलाम अस्सुन्ना अल मन्शूरा लि एतक़ाद अत्ताइफा अन्नाजिया अल मन्सूरा" लेखक : शैख हाफिज़ अल हिकमी,पेज : 39,प्रकाशक : दार अल मुअय्यिद – रियाद।

गवाही देने से दुनियादारी चाहता हो जैसा कि यह कपटाचारियों का तरीक़ा है।

6. सच्चाइ के साथ (उस पर क़ायम रहना) जिस की ज़िद (विपरीत)झूट बयानी है,इस की दलील अल्लाह का यह कथन है :

(وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ)

तर्जुमा : उन लोगों को भी हम ने खूब प्रखा, निःसंदेह अल्लाह ताला उन्हें भी जान लेगा जो सच कहते हैं और उन्हें भी मालूम कर लेगा जो झूटे हैं।

नबी ﷺ ने फर्माया : जो व्यक्ति सच्चे दिल से इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के पैग़म्बर हैं अल्लाह ताला उस पर जहन्नम की आग हराम कर देता है। (2)

7. इस से और इस के मानने वालों से प्रेम करना और इस से दुश्मनी रखने वालों से दुश्मनी रखना।
8. उन बातों का इन्कार करना जो इस के विपरीत हैं,रसूल ﷺ की गवाही देने की विपरीत बातें अधिकतर हैं,उन में सब से बड़ी विपरीत चीज़ अल्लाह के अतिरिक्त की इबादत है,जिस का इन्कार अनिवार्य है,और संपूर्ण इबादतों को केवल एक अल्लाह के लिये खालिस करना अनिवार्य है जैसा कि अल्लाह ताला फर्माता है :1111

तर्जुमा : जो व्यक्ति अल्लाह कि सिवा दुसरे माबूदों का इन्कार करके अल्लाह पर ईमान लाये उस ने मज़बूत कड़े को थाम लिया जो कभी न टुटेगा।

---

(2)इसे बुखारी (128) ने मुआज़ बिन जबल ﷺ ने रिवायत किया है।

● हे मामिनो ! मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की गवाही देने के विरुद्ध पांच बातें हैं :

पहली बात : ऊपर लिखी हुई आठ शर्तों में से किसी एक या अधिक की मुखालफत करना।

दूसरी बात : दीन के ऐसे भाग को नकारना जो लाज़मी तौर पर मश्हूर और जाना पहचाना है जैसे रसूल ﷺ की नबूव्वत या आप की बशरियत अर्थात इंसान होने का इन्कार या उम्मते मुहम्मदिया पर आप के जो हुक़ूक़ हैं उन का इन्कार या इस बात का इन्कार कि आप अंतिम नबी हैं,या इस बात का इन्कार करना कि आप ने पूरे दीन को (संसार वालों तक) पहुंचा दिया,या इस चीज़ का इन्कार कि आप की रिसालत इन्सान और जिन्नात के लिये आम है,या इस्लाम के किसी स्तंभ का इन्कार या दारू या चोरी या ज़िना और इस प्रकार के बड़े बड़े गुनाहों के हराम होने का इन्कार।

तीसरी बात : आप की शख्सियत पर कीचड़ उछाल कर आप को तक्लीफ देना,चाहे आप की ज़िंदगी में हो या आप के मरने के बाद,जैसे आप की सत्यता या आप की समझ या आप की पाकदामनी पर तानो तश्नी करना और आप पर कीचड़ उछालना,इन सब बातों से मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की गवाही देने का इन्कार लाज़िम आता है,क्योंकि यह ईमान के विपरीत है,इस की दलील यह है कि कुर्आन के अंदर यह प्रमाणित है कि अल्लाह ताला ने आप को चुना।

आप को तक्लीफ देने वालों के काफिर होने की दलील अल्लाह का यह कथन है :

(إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا)

तर्जुमा : जो लोग अल्लाह और उस के पैग़म्बर को तक्लीफ देते हैं उन पर लोक और प्रलोक में अल्लाह की फटकार है और उन के लिये रुस्वा करने वाला अज़ाब है।

तान कहते हैं दया से दूर करने को जिसे अल्लाह अपनी दया से दूर कर दे वह काफिर ही हो सकता है।

आप को दुख देने का एक तरीक़ा आप का मज़ाक़ उड़ाना भी है चाहे गंभीरता के साथ हो या हंसी मज़ाक़ में।

आप का मज़ाक़ उड़ाने वालों के काफिर होने की दलील सूरे तोबा के अंदर अल्लाह का यह कथन है :

(وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ)

तर्जुमा : यदि आप उन से पूछें तो साफ कह देंगे कि हम तो बस आपस में बोल रहे थे,कह दीजिये कि अल्लाह उस की आयतें और उस का रसूल ही तुम्हारे हंसी मज़ाक के लिये रह गये हैं,तुम बहाने न बनाओ,निःसंदेह तुम अपने ईमान के बाद बेईमान होगये।

शैख अब्दुर्रहमान बिन सादी रहिमहुल्लाह इस आयत की तफ्सीर में लिखते हैं : अल्लाह और उस के पैग़म्बर का मज़ाक़ उड़ाना ऐसा कुफ्र है जो दीन से निकाल देता है,क्योंकि दीन की इमारत अल्लाह और उस के दीन और उस के रसूलों के सम्मान पर खड़ी है,इन में से किसी एक का मज़ाक उड़ाना उस अस्ल के विपरीत और हद दर्जा मुखालिफ कार्य है।

चौथी बात : नवाक़िज़े इस्लाम(इस्लाम से निकाल देन वाली चीजों) में से किसी एक में पड़ना जैसे अल्लाह की इबादत में शिर्क करना या यह विश्वास रखना कि कोई दूसरा तरीक़ा रसूलुल्लाह ﷺ के तरीक़े से अधिक संपूर्ण है या आप के फैसले से कोई दूसरा फैसला उत्तम है,उन लोगों समान जो शैतान के फैसले को आप के फैसले पर तर्जीह देते हैं या उन की तरह जो कम्युनिज़म या लोक तंत्र को इस्लामी निज़ाम पर तर्जीह देते हैं तो ऐसा व्यक्ति काफिर है,या रसूल ﷺ की लाई हुई किसी तालीम को नापसंद करना,या अल्लाह के दीन या उस के सवाब और सज़ा का मज़ाक उड़ाना भी कुफ्र है,या

जादू करना या अल्लाह के दीन से मुंह मोड़ना (भी कुफ्र है) इस प्रकार कि न तो उसे सीखे और न उस पर अमल करे। [3]

शहादते रसूल की पांचवीं और अंतिम विपरीत बात : आप की शान में गुलू करना अर्थात आप की शान को हद से बढ़ाना,आप ने अपने जीवन में और अपनी मौत के समय में भी अपने विषय में लोगों को गुलू करने से सख्ती के साथ रोका है ताकि लोग आप की शान में गुलू करने से बचें। उम्मत के लिय आप कितने बड़े शुभचिंतक थे,दसियों हदीसों में आप ने गुलू करने से रोका है,उन में से एक उमर बिन खत्ताब ﷺ से रिवायत है,वह कहते हैं कि मैं ने नबी ﷺ से यह फर्माते हुये सुना : तुम लोग मुझे हद दर्जा न बढ़ाओ जिस प्रकार ईसाइयों ने इब्ने मर्यम को बढ़ा दिया,तुम लोग मुझे अल्लाह का बंदा और उस का रसूल ही कहो। [4] हदीस में इत्तिरा शब्द का अर्थ है : प्रशंसा में हद से बढ़ जाना। [5]

अल्लाह मुझे और आप को कुर्आन की बर्कत से लाभ पहुंचाये,और मुझे और आप को इस की आयतों और हिक्मत भरे नसीहत से लाभ पहुंचाये,मैं अपनी यह बात कहते हुये अल्लाह से अपने लिये और आप के लिये क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,निःसंदेह वह क्षमा मांगने वाले को अधिक देने वाला है।

---

(3)देखें : शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब रहिमहुल्लाह कि किताब : "नवाक़िज़ुल इस्लाम"

(4)इसे बुखारी (3445) ने रिवायत किया है।

(5)देखें : " अन्निहाया फी ग़रीब अल हदीस "

दूसरा खुत्बा

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى.

दरूदो सलाम के बाद :

आप जान लें —अल्लाह आप पर दया करे— नबी ﷺ की शान में गुलू करने की दो क़िस्में हैं,एक क़िस्म दीने इस्लाम से निकाल देती है और दूसरी क़िस्म उस से कम दर्जे की है।

● दीन से निकाल देने वाले गुलू का उदाहरण : आप के लिये किसी प्रकार की इबादत करना,जैसे आप को पुकारना,या रुबीबियत की कोई विशेषता आप की ओर मंसूब करना,जैसे बारिश बरसाने,जीविका देने और इल्मे ग़ैब की निस्बत आप की ओर करना,यह सब गलत और कुफ़्र के काम हैं और यह आप की शान में गुलू करने के कारण हैं, अल्लाह फर्माता है :

(قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ)

तर्जुमा : आप कह दीजिये कि मैं स्वयं अपने लिये किसी लाभ का इख्तियार रखता हूं और न किसी हानि का,मगर जितना अल्लाह ने चाहा हो और यदि मैं ग़ैब की बातें जानता तो मैं अधिकतर लाभ प्राप्त कर लेता और मुझे कोई हानि न पहुंचती।

● रहा वह गुलू जो दीने इस्लाम से नहीं निकालता और वह बिदअत में से है तो गुलू की यह क़िस्म भी पहली क़िस्म की ओर ले जाती है,इस की मिसाल आप के जाह की सौगंध खाना,या आप की ज़ात का वसीला पकड़ना,या जश्ने मीलादुन्नबी मनाना,या यह अक़ीदा रखना कि अल्लाह ने आप को नूर से पैदा किया है,या यह अक़ीदा

रखना कि अल्लाह ताला ने संसार को आप के लिये पैदा किया ,आप की क़ब्र की ओर यात्रा करना,इसे अधिकतर लोग करते हैं और नेकी समझ कर करते हैं जब कि यह बिदअत है,क्योंकि यह ऐसे अमल के ज़रिये नज़्दीकी प्राप्त करना है जिस का शरीअत ने आदेश नहीं दिया है,बल्कि इस से मना किया है,नबी ﷺ ने फर्माया : तीन मस्जिदें : मस्जिदे हराम,मस्जिद अक़्सा और मेरी इस मस्जिद अर्थात मस्जिदे नबवी के अतिरिक्त किसी और मस्जिद की ओर (सवाब की निय्यत से) यात्रा न किया जाये। (6)

इस हदीस में आप ने मार्गदर्शन किया है कि दिल में मस्जिदे नबवी की ओर यात्रा का इरादा हो न कि क़ब्रे नबवी की ओर,जिस ने अपने दिल में क़ब्रे नबवी की ओर यात्रा की निय्यत की तो उस ने ऐसे अमल के ज़रिये निकटता प्राप्त की जिस की शरीअत इजाज़त नहीं देती ,बल्कि यह अमल उसी पर लौटा दिया जायेगा,स्वीकार न होगा,नबी ﷺ ने फर्माया : जो व्यक्ति ऐसा काम करे जिस का आदेश हम ने नहीं दिया तो वह निरस्त है। अधिक आप ने फर्माया : अमलों का दारो मदार निय्यतों पर है। अर्थात अमलों के स्वीकार होने का दारो मदार निय्यतों पर है,यदि बंदा मुस्लिम मस्जिदे नबवी में प्रवेश कर के नमाज़ अदा करे तो उस का यह इरादा पूरा हो जायेगा,उस के पश्चात यह सही होगा कि वह क़ब्रे नबवी की ज़्यारत करे,नबी ﷺ और आप के सहाबा (अबू बक्र एवं उमर) पर सलाम भेजे,उस के लिये यह भी सही होगा कि वह मस्जिदे कुबा जाये और उस में दो रकात नफ्ल पढ़े जैसा नबी ﷺ किया करते थे,वह बक़ी कब्रस्तान की भी ज़्यारत कर सकता है और उस में दफन लोगों को सलाम भेज सकता है,इसी प्रकार उहुद के शहीदों और दूसरे क़ब्रस्तानों की ज़्यारत कर सकता है ताकि इब्रत और नसीहत हासिल करे और उन में दफन लोगों पर सलाम भेजे।

---

(6) इसे बुखारी (1995) और मुस्लिम (827) ने अबू सईद खुदरी ؓ से रिवायत किया है।

● हे मुसलमानो! नबी ﷺ के सम्मान के विषय में लोगों की तीन क़िस्में हैं :

पहली क़िस्म : शिद्दत पसंद और गलत मार्ग वाले लोग जो आप के हक़ के साथ न्याय नहीं करते हैं और आप से प्रेम और दोस्ती ,आप की पैरवी और सम्मान का जो वाजबी हक़ है उसे अदा नहीं करते,इन की दो क़िस्में हैं :

1 : वह गुनहगार और ग़ाफिल लोग जो आप की पैरवी से मुंह फेरे रहते हैं।

2 : वह हद से आगे जाने वाले बिदअती जो नबी ﷺ के सम्मान मे ग़लत मार्ग पर चलते हैं,जैसे गुलू करने वाले शीया समुदाय के लोग जो अपने गुमान अनुसार मासूम इमामों को नबी ﷺ पर प्रतिष्ठा देते हैं,इसी प्रकार सूफियों का बातिनी गुट जो अवलिया और अक़ताब को नबी ﷺ से बड़ा समझते हैं।

दूसरी क़िस्म : गुलू करने वाले लोग,यह पहली क़िस्म के विपरीत हैं यह लोग आप को अल्लाह के दर्जे से ऊपर मानते हैं,आप के लिये ऐसे कार्य करते हैं जो केवल अल्लाह का हक़ है जैसे दुआ,मुनाजात,मन्नत और ज़िबह करना आदि,या आप को ऐसी विशेषताओं वाला मानते हैं जो विशेषतायें अल्लाह के लिये खास हैं,जैसे ग़ैब का ज्ञान आदि,गुलू की यह क़िस्म क़ब्र प्रस्तों में पाई जाती है।

तीसरी क़िस्म : हक़ प्रस्तों की है जो बीच का मार्ग अपनाते हैं,यह आप से प्रेम और दोस्ती का नाता रखते हैं,आप के शरई हक़ को अदा करते हैं,आप की शान में गुलू करने से दूर रहते हैं,अल्लाह हमें उन में शामिल करे और उन के मार्ग पर जमा दे।

आप यह याद रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा बनाए रखे- अल्लाह ने आपको बहुत बड़े कार्य का आदेश दिया है अल्लाह का कथन है:

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.(الأحزاب56)

अर्थात: " अल्लाह तआला एवं उसके(फरिश्ते) देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं ए इमान वालो! तुम भी उन पर दुरुद (अभिवादन) भेजो एवं खूब सलाम भेजते रहो."

अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

ए अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर! बहुवाद, एवं बहुवादियों को अपमानित कर दे! तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे! तू अपने मुवह्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) को सहायता प्रदान कर!

ए अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना, ए अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रह़मत (दया) का कारण बना दे! ए अल्लाह हमारे प्रति इस्लाम और मुसलमानों के प्रति जो बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके के लिए वबाल बना दे!

ए अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हमसे दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रुप से हमारे देश से! ए दोनों जहां के पालनहार! ए अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं.

ए हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में हर प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

माजिद बिन सुलेमान अर्रस्सी

16 जुमादल आखिर 1442

जुबेल – सऊदी अरब

00966505906761

अनुवाद : अब्दुल करीम अब्दुस्लाम मदनी।

ghiras4translation@gmail.com

@Ghiras_4T